क्षणं जानहि पंडिए

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भगवान महावीर ने कहा है– हे मानव क्षण भर भी प्रमाद न करो। प्रमाद आलस्य हैं। पण्डित व्यक्ति क्षण–क्षण के मूल्य को जानता है। कल आएगा या नहीं कोई नहीं जानता। कल कभी आता भी नहीं। काल की गति बहुत तीव्र गति से चल रही है। इसलिए कल पर निर्भर नहीं रहना चाहिए–

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।

पल में परलय होयेगी, बहुरि करोगे कब।।

सुख–दुःख जीवन में बदलते रहते हैं। कुछ भी स्थाई नहीं है। इसलिए स्वभाव में रमण करना चाहिए। स्वभाव सुख है और विभाव दुःख। मानव जीवन अमूल्य है। मानव सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। मानव तन पाकर ईश्वर का चिंतन, ईश्वर में विश्वास और धर्म कर्म करने में मन लगाना हमारा कर्तव्य है। जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र और तप को मोक्ष का मार्ग बताया गया है। ज्ञान यदि प्राप्त हो गया लेकिन ज्ञान के अनुरूप आचरण नहीं है तो ज्ञान से कोई लाभ नहीं। तप जीवन को तपाता है। हम जब शरीर से कोई साधना करते हैं तो शुभ प्रवृत्ति के द्वारा आत्मा के साथ कार्मण शरीर जुड़ जाता है। आत्मा से जब कार्मण शरी जब पृथक होता है तो हमारे अन्दर विधेयात्मक भाव प्रकट होते हैं।

किसान वर्षा होने के बाद ही बीज का बपन करता है। बीज बोने में वह स्वतंत्र है, किन्तु फल प्राप्त करने में वह स्वतंत्र नहीं है। जैसा बीज बोया है उसे वैसा ही फल प्राप्त होगा उसमें परिवर्तन नहीं हो सकता। इसलिए सदैव मन को विधेयात्मक भावों से युक्त रखना चाहिए। नकारात्मक विचार व्यक्ति को पतन की ओर ले जाते हैं। पुरूषार्थ के अनुसार मानव अपना रास्ता स्वयं बनाता है। संसार में सकारात्मकता ही अधिक है। किन्तु जो नकारात्मक विचार के व्यक्ति होते हैं उन्हें सकारात्मकता भी नकारात्मकता दिखती है। जो अच्छा चयन

करता है उसका उत्थान होता है जो बुराई का चयन करता है उसका पतन होता है। इसलिए मनुष्य को सदैव शुभ चिंतन करना चाहिए। शुभ चिंतन से मन शुद्ध रहता है।

सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। यहां के ऋषियों, मुनियों, महर्षियां ने एकान्त में रहकर कन्दमूल फल खाकर नदियों और झरनों का पानी पीकर स्वस्थ तन, मन के द्वारा जो चिन्तन दिया है वह भारतीय साहित्य का आधार स्तम्भ है। महर्षि वेदव्यास, महर्षि वाल्मीकि, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गोस्वामी तुलसीदास जैसे महापुरुषों ने जो विचार दिये है आज पूरा भारत उसी पर चल रहा है। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत्, रामचरितमानस, आगम और त्रिपिटक भारतीय साहित्य की धरोहर हैं। इनमें उच्च विचारों का प्रतिपादन है। जिसका अध्ययन अध्यापन करके भारतीय मनीषा जीवित है। इन महापुरुषों ने राजमहल को त्यागकर साधारण जीवन जीने का निर्णय लिया। इन्होंने संसार के सत्य को खोजा और सामान्य जनता में इसका उपदेश किया। उन्हीं के दिखाये हुए मार्ग पर आज पूरा विश्व चल रहा है।

मानव जीवन बड़ा ही अमूल्य है। मानव जीवन को पाकर यदि कोई इसको व्यर्थ में गंवा दे तो उसका जीवन निरर्थक ही रहता है। बड़े भाग्य मानुष तन पावा अर्थात् मनुष्य का शरीर बड़े पुण्य कर्म के पश्चात् ही प्राप्त होता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। चौरासी लाख जीवन योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ है। मानव एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। चेतना का पूर्ण विकास मानव में हुआ है। एक इन्द्रिय वाले जीव, दो इन्द्रिय वाले जीव, तीन इन्द्रिय वाले जीव, चार इन्द्रिय वाले जीव इन्द्रिय विकल कहलाते हैं, क्योंकि संपूर्ण इन्द्रियां इन जीवों में नहीं है। पंचेन्द्रिय प्राणियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। पशुओं में भी पांच इन्द्रियां होती हैं किन्तु सोचने विचारने की क्षमता उनमें नहीं होती। मानव और पशु में यही अंतर है कि मानव ज्ञान संपन्न है। इसलिए मानव सर्वश्रेष्ठ है। मानव तन पाकर यदि मानव में मानवता का विकास न हो तो वह पशु से भी वदतर है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के सुख–दुःख से प्रभावित होना उसका धर्म है। यही कुछ ऐसी बाते है जो कि मानव को अन्य पंचेन्द्रिय प्राणियों से अलग करती है। मानव का सार है मनुष्यता, जो हर मनुष्य में पायी जाती है। इसे सुरक्षित रखना

और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखना मानव का परम कर्त्तव्य है। मानव एक धर्मनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने मन को शिव संकल्पों से युक्त करना चाहिए। धर्म इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म। मनुष्यता ही मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है तथा मानव प्रकृति के उस पक्ष पर बल देती है जो प्रेम, मैत्री, दया सहयोग के रूप में अभिव्यक्त होती है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त हैं। मानव जीवन में कर्म को पूर्ण महत्व दिया गया है और यह स्वीकार किया गया है कि मानव की श्रेष्ठता का आधार, विकास का आधार जन्म लेने मात्र से नही अपितु कर्म पर आधारित है।

361. अहिंसा